

Life-Span Development Prespective

जीवनकाल विकास परिप्रेक्ष्य (Life-Span Development Perspective) मनोविज्ञान का एक आधुनिक और व्यापक दृष्टिकोण है। यह इस विचार को चुनौती देता है कि विकास केवल बचपन या किशोरावस्था तक ही सीमित है। इसके बजाय, यह मानता है कि विकास गर्भाधान (Conception) से शुरू होकर मृत्यु (Death) तक चलने वाली एक निरंतर प्रक्रिया है।

यहाँ इसके स्वरूप (Nature), महत्व (Importance) और सिद्धांतों (Principles) का विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. जीवनकाल विकास का स्वरूप (Nature of Life-Span Development)

इसका स्वरूप गतिशील और परिवर्तनशील है। इसके स्वरूप को समझने के लिए तीन प्रमुख प्रक्रियाओं का मेल देखा जाता है:

- जैविक प्रक्रियाएँ (Biological Processes):** व्यक्ति के शरीर में होने वाले भौतिक परिवर्तन। जैसे- मस्तिष्क का विकास, लम्बाई और वजन बढ़ना, और बुढ़ापे में हृदय की कार्यक्षमता में बदलाव।
- संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ (Cognitive Processes):** व्यक्ति की सोच, बुद्धि और भाषा में होने वाले परिवर्तन। जैसे- किसी समस्या को सुलझाना या कविता याद करना।
- सामाजिक-संवेगिक प्रक्रियाएँ (Socio-emotional Processes):** व्यक्ति के दूसरों के साथ संबंधों, भावनाओं और व्यक्तित्व में होने वाले बदलाव। जैसे- एक शिशु का अपनी माँ के प्रति लगाव या एक किशोर का आक्रामक व्यवहार।

2. जीवनकाल परिप्रेक्ष्य के सिद्धांत (Principles of Life-Span Perspective)

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक पॉल बाल्ट्स (Paul Baltes) ने इसके सात मुख्य सिद्धांत दिए हैं:

- विकास आजीवन है (Development is Lifelong):** विकास किसी एक आयु वर्ग (जैसे बचपन) तक सीमित नहीं है। हर उम्र में बदलाव होते रहते हैं।

2. **विकास बहुआयामी है (Development is Multidimensional):** इसमें जैविक, मानसिक और सामाजिक सभी पहलू एक साथ काम करते हैं। यदि एक क्षेत्र प्रभावित होता है, तो उसका असर दूसरे पर भी पड़ता है।
 3. **विकास बहुदिशीय है (Development is Multidirectional):** जीवन भर कुछ क्षमताएं बढ़ती हैं तो कुछ घटती हैं। उदाहरण के लिए, उम्र बढ़ने के साथ अनुभव (Wisdom) बढ़ता है, लेकिन सूचनाओं को प्रोसेस करने की गति कम हो जाती है।
 4. **लचीलापन (Plasticity):** मनुष्य में खुद को ढालने की क्षमता होती है। उचित प्रशिक्षण और वातावरण से किसी भी उम्र में नई क्षमताएं विकसित की जा सकती हैं।
 5. **विकास प्रासंगिक है (Development is Contextual):** विकास हमेशा एक संदर्भ (Context) में होता है। इसे तीन प्रभावों में बाँटा गया है:
 - **आयु-क्रमित प्रभाव:** जैसे स्कूल जाना या सेवानिवृत्ति।
 - **इतिहास-क्रमित प्रभाव:** जैसे युद्ध या महामारी (जैसे COVID-19) का प्रभाव।
 - **गैर-सामान्य प्रभाव:** जैसे किसी का लॉटरी जीतना या अचानक कोई बड़ी दुर्घटना।
 6. **विकास बहुविषयक है (Multidisciplinary):** इसे केवल मनोवैज्ञानिक ही नहीं, बल्कि समाजशास्त्री, मानवविज्ञानी और जीवविज्ञानी भी मिलकर समझते हैं।
 7. **विकास में लाभ और हानि का संतुलन (Growth, Maintenance, and Loss):** जैसे-जैसे हम बूढ़े होते हैं, विकास का लक्ष्य "बढ़त" (Growth) से हटकर "रखरखाव" (Maintenance) और "क्षतिपूर्ति" (Regulation of loss) की ओर चला जाता है।
-

3. जीवनकाल विकास का महत्व (Importance)

इस परिप्रेक्ष्य को समझना हमारे लिए निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है:

- **आत्म-बोध (Self-Understanding):** यह हमें यह समझने में मदद करता है कि हमारे जीवन के अनुभव हमें कैसे आकार दे रहे हैं।
 - **शिक्षा और पालन-पोषण:** माता-पिता और शिक्षकों को यह समझने में मदद मिलती है कि बच्चों के व्यवहार में बदलाव कब सामान्य है और कब मदद की जरूरत है।
 - **वृद्धावस्था को समझना:** यह बुढ़ापे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है और बुजुर्गों की मानसिक स्थिति को समझने में मदद करता है।
 - **सामाजिक नीतियां:** यह सरकारों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रिटायरमेंट की बेहतर योजनाएं बनाने में मदद करता है।
-

मुख्य तुलना: निरंतरता बनाम असंततता

विकास का प्रकार	विवरण	उदाहरण
निरंतर (Continuous)	विकास धीरे-धीरे और लगातार होता है।	एक पौधे का धीरे-धीरे बढ़ना।
असंतत (Discontinuous)	विकास स्पष्ट चरणों या सीढ़ियों में होता है।	एक इल्ली (Caterpillar) का तितली बनना।

जीवनकाल विकास परिप्रेक्ष्य हमें बताता है कि विकास एक स्थिर प्रक्रिया नहीं है। यह आनुवंशिकता (Heredity) और पर्यावरण (Environment) के बीच का एक निरंतर चलने वाला संवाद है।